بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

DeenSahih Lecture Summary

किताब अत-तौहीद के चुनिंदा अध्याय।

दूसरा बयान: शिर्क के कार्य जैसे अंगूठियाँ और डोरियाँ पहनना

शनिवार, 03 जून 2023

वक्ता: शेख अबू हफ्सा काशिफ खान

शेख़ अल इस्लाम मुहम्मद इब्न अब्दुल वह्हाब (अल्लाह उन पर रहम करे) द्वारा लिखित किताब अत-तौहीद से लिया गया।

१. शेख़ ने अपना उपदेश खुतबत-उल-हाजा के साथ शुरू किया और सबसे सर्वश्रेष्ठ रचना नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) और उनके साथीयों के प्रति दुआ भेजी।
२. लोगों को अच्छाई का आदेश देना और बुराई से रोकना मुसलमानों पर अनिवार्य है '**तथा तुममें एक समुदाय ऐसा अवश्य होना चाहिए, जो भली बातों की ओर बुलाये, भलाई का आदेश देता रहे, बुराई से रोकता रहे और वही सफल होंगे।**' - सूरह आले-इमरान, आयत १०४।
३. भूलना और ग़लतियाँ करना मनुष्य के स्वभाव में है। वह सीखता नहीं और बार बार वही ग़लतियाँ दुहराते रहता है।
४. आदम से नूह (अलैहिमुस्सलाम) के बीच की दस पीढ़ियाँ तौहीद पर थीं। फिर शैतान ने लोगों को बहकाया और वे मूर्तियों की पूजा करने लगे। तो अल्लाह अपने पैग़म्बरों (दूतों) को भेजता रहा, जिन्होंने अपने लोगों को तौहीद की ओर बुलाया।
५. पैग़म्बरों और रसूलों के बाद, सच्चे लोग तौहीद के प्रचारक होंगे, जिनमें से विद्वान होंगे जैसे के किताब अत-तौहीद के लेखक, शेख अल-इस्लाम मुहम्मद इब्न अब्दुल वह्हाब (अल्लाह उन पर रहम करे) ।
६. किताब अत-तौहीद इस विषय पर लिखी गई सबसे महत्वपूर्ण किताबों में से एक है, और ये उचित है कि वह बार बार पढ़ी और पढ़ाई जाये क्योंकि वह बड़े और छोटे शिर्क के विषय को संबोधित करती है।
७. अंगूठी, डोरी या इन जैसी कोई और चीज़ पहनना भी शिर्क में शामिल है, चाहे वो ख़ुद को किसी परेशानी, सज़ा या बीमारी से बाहर लाने के लिए पहनी गयी हो या उनसे बचने के लिए पहनी गयी हो।

८. क़ुरैश के लोग अपनी संपत्ति और बच्चों को बुरी नज़र से बचाने के लिए तावीज़, शंकु और मनी का इस्तेमाल करते थे। आज अगर हम भारतीय उपमहाद्वीप को देखें और यहाँ के लोगों के पास जो शिर्क के माध्यम हैं, तो ये बिलकुल ऐसा ही है जैसा लेखक ने बताया है, मानो उन्होंने ये किताब इसी जगह और वक़्त के लिए लिखी हो।

९. तौहीद के विषय को हर समय और स्थान पर अत्यधिक महत्व देना चाहिए। यही पैग़म्बरों की आदत थी। वे अपने मृत्यु के समय पर भी शिर्क के ख़िलाफ़ चेतावनी देते रहे, जैसे कि इस आयत में आया है **'क्या तुम याक़ूब के मरने के समय उपस्थित थे; जब याक़ूब ने अपने पुत्रों से कहाः मेरी मृत्यु के पश्चात् तुम किसकी इबादत (वंदना) करोगे?'** सूरह बक़रा - आयत १३३

१०. और इसी तरह नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने अपनी मृत्यु के समय कहा, **'अल्लाह की लानत हो यहूदियों और ईसाइयों पर, क्योंकि उन्होंने अपने लोगों की क़ब्रों पर इबादत के स्थल बनाये। बेशक मैं अल्लाह का ग़ुलाम हूं, इसलिए मुझे अल्लाह का ग़ुलाम और पैग़म्बर कहो।'**

११. किसी अंगूठी, डोरी, जुराब, कमीज़ या किसी और चीज़ पर भरोसा करना, यह इन चीज़ों को अल्लाह के साथ साझी बनाना है। अल्लाह ही है जो फ़ायदा पहुँचा सकता है, वही मार्गदर्शक और भटकाने वाला है। वही रचता है और नष्ट करता है, वही जीवन और मौत देता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपना ईमान, अपना भरोसा अल्लाह में ही रखना चाहिए, जो आसमानों का रब है।

१२. पहली आयत जो लेखक ने बयान की - **"आप कहिये कि तुम बताओ, जिसे तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, यदि अल्लाह मुझे कोई हानि पहुँचाना चाहे, तो क्या ये उसकी हानि दूर कर सकते हैं? अथवा मेरे साथ दया करना चाहे, तो क्या ये रोक सकते हैं उसकी दया को? आप कह दें कि मुझे पर्याप्त है अल्लाह और उसीपर भरोसा करते हैं, भरोसा करने वाले।"** सूरह ज़ुमर - आयत ३८। इस आयत में एक स्पष्टीकरण है कि हर प्रकार का शिर्क झूठा है, चाहे वो बड़ा हो या छोटा, ज़ाहिर हो या छिपा हो, कथन में हो या कर्म में हो या चाहे फिर वो हमारे दिलों में ही क्यों ना हो।

१३. तवक्कुल (निर्भरता) इबादत (विभक्ति) की एक क्रिया है। और आयत में यह स्पष्टीकरण है कि जब सबसे महान और सदाचारी रचना, चाहे वो ईसा हों या मोहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) हों, सूरज, चांद, फरिश्ते हों, यदि ये सब हमारी मदद नहीं कर सकते, तो हम कैसे सोच सकते हैं कि एक अंगूठी या तावीज़, या हार, या कान की बालियां हमारी कुछ मदद कर सकती हैं।

१४. इमरान इब्न हुसैन (अल्लाह उन से राज़ी हो) की रिवायत में आता है, जहां पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने एक आदमी को देखा, और उसके हाथ में एक पीतल की अंगूठी थी। तो उन्होंने (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पूछा, "यह क्या है?" तो साथी ने उत्तर दिया, **"ये मुझे अल-वाहिना (एक बीमारी जो हाथो को कमज़ोर कर देती है) से बचाने के लिये है"** । नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कहा, **"इसे फेंक दो, क्योंकि यह केवल तुम्हारी कमज़ोरी में बढ़ावा देगी। अगर तुम इसे पहने हुए मर जाओगे तो तुम कभी सफल नहीं हो सकोगे।"**

१५. शिर्क ना तो खुशियों का ज़रिया है और ना ही सफ़लता या सुरक्षा का कोई माध्यम। इससे केवल नुक़सान होता है।और नुक़सान की मात्रा शिर्क करने वाले की नीयत के बराबर होती है।
१६. अब्दुर रज़्ज़ाक ने अपनी मुसन्नफ में बयान किया कि अब्दुल्लाह इब्न मसूद (अल्लाह उन से राज़ी हो) ने कहा कि मुझे यह अधिक पसंदीदा होगा कि मैं अल्लाह के नाम पर झूठी क़सम खाऊं बजाय इसके कि मैं अल्लाह के अलावा किसी और की सच्ची क़सम खाऊँ।
१७. अल्लाह के नाम पर झूठी क़सम खाना मुख्य पापो में से है, लेकिन यह उससे बेहतर है कि अल्लाह के सिवा किसी और के नाम पर क़सम खाकर सच बोलें। छोटा शिर्क मुख्य पापो से बड़ा होता है, जैसा कि इब्न तय्यमियाह (अल्लाह उन पर रहम करे) ने स्पष्ट किया। **तौहीद के साथ झूठ बोलना शिर्क पर होकर सच बोलने से बेहतर है।**
१८. पैग़म्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने एक हदीस में कहा, **'जो व्यक्ति इन तामाइम (मनका) को लटकाता है, उसने शिर्क किया है।'** यह उन लोगों के लिए फटकार है जो अपना भरोसा अल्लाह के अलावा किसी और चीज़ में रखते हैं। यह चीज़ें (जो लोग लटकाते हैं), उनकी जरूरतों या इच्छाओं को पूरा नहीं करेंगी।
१९. एक रिवायत में आया है कि हुदैफ़ा इब्न अल-यमान (अल्लाह उन से राज़ी हो) ने देखा कि एक आदमी के हाथ या कलाई पर ऐक डोरी बंधी थी क्योंकि उसे बुख़ार था, तो उन्होंने उसे काट दिया और यह आयत पढ़ी, **'और उनमें से अधिक्तर अल्लाह को मानते तो हैं, परन्तु (साथ ही) मुश्रिक (मिश्रणवादी) भी हैं।'** सूरह युसूफ - १०६

इस रिवायत से प्राप्त लाभ

१. उन चीज़ों पर ईमान रखना जो हम पहनें या टंगायें या अपने बच्चों को पहनायें, या अपनी गाड़ियों पर लगाए या अपने कारोबार के लिए इस्तेमाल करें ये सोचते हुए की उन पर कुछ परेशानी आएगी या यह ईमान रखते हुए की ऐसा करने से हम बुरी नज़र से बच जाएँगे, तो यह सब शिर्क के कार्य हैं।
२. **अच्छाई का हुकुम देना और बुराई से रोकना।** जब हुदैफ़ा इब्न अल-यमान (अल्लाह उन से राज़ी हो) ने अपने हाथ से उस डोरी को काटा तो वह पैगंबर के उस कथन के अनुसार है - अगर आप किसी बुराई को देखें तो अपने हाथ से बदलें और अगर आप यह नहीं कर सकते तो अपनी ज़बान से बदलें और अगर आप ये भी नहीं कर सकते तो अपने दिल में उसे नापसंद करें।
३. **सहाबा को तौहीद का ज्ञान था और वह उस पर केन्द्रित थे।** तौहीद का त्याग सफलता का त्याग है। वे लोग जो सरकारों को बदलकर, नए मंत्रियों को लाकर समाज की समस्याओं का समाधान करने की कोशिश करते हैं, तो इनमें से कोई भी बात उन्हें किसी भी चीज़ में मदद नहीं करेगी जब तक वे तौहीद की ओर वापस नहीं लौटते। इन समस्याओं का समाधान इन किताबों को समझने मे है। हमारा ध्यान लोगों को तौहीद पढ़ाने पर होना चाहिए। तौहीद में परिवार का, सारे समाज का और पूरी मानवता का सुधार है।

शेख़ ने अपना उपदेश पैग़म्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) और उनके साथियों पर दुआ भेजकर समाप्त किया।

ऑडियो लिंक: https://www.deensahih.com/wp-content/uploads/2023/06/chapter-6-acts-of-polytheism-shaykh-abu-hafsah-kashiff-khan.mp3